॥ श्रीवैदेहीप्राणवल्लभोविजयतेतराम् ॥
॥ श्रीमतीसर्वेश्वरीचारुशीलादेव्यैनमः ॥

ललित माधुरी

अथ श्रीप्रीतिरसरूपवर्णन

चौ०जयतिजानकीबल्लभप्यारे। यहि सुमिरन यहि ध्यानहमारे
हे श्रीवैदेही बल्लभ जू। हे रशिकेन्द्रशरण सुल्लभ जू
हे श्रीयुगलकिशोर किशोरी। रति मनमथ लाजत लखिजोरी
हे श्रीललली लाल रघुनन्दन। श्यामा श्यामरसिक चितचंदन
हे श्री रहस निकुञ्ज बिहारी। श्री साकेत रशिक मन हारी
जयति लाड़िलीलाल सलौने। श्याम गौर अस अहै न होने
जयति प्रियाप्रीतम रसरसिया। हे श्रीकनकभवननितवसिया
हे श्रीसिय पिय रसिक दुलारे। युगल चन्दतिहुँपुर उजियारे

दो०-ललित नाम सियलालके, ललित सुपरिकर जाल।
ललितबिहारश्रीकृपावती, ललित लाड़िलीलाल ॥१॥
श्रीआचारज महल में, श्रीचारुशीलाजू मान।
श्रीकृपावतीसद्गुरुसुमम, है सब सुख की खान ॥२॥

चौ०जयतिजानकीवल्लभप्यारे। जो ऐसे मृदु बचन उचारे
हे स्वामिनिमिथिलेशकिशोरी। तुम हो सब विधि रक्षक मोरी
मेरा सियजू मैं सिय जू की। शरण सदा हौं सियपियजूकी
और आश स्वप्ने नहिं ल्यावै। सो अनन्यता पदवी पावै
सिय जू में जाकी दृढ़ प्रीती। सो सब भांति हमारो मीती

हंसि करि वाकोकण्ठलगाऊं । विरह आगिकी तपनिबुझाऊं
नैनन से न्यारो नहिं होवों । निशिदिनप्यारे को मुखजोवों
सिय अनुरागी मेरौ प्यारौ । मातु पिता गुरु बन्धु बिचारौ

दो०अलिविहारिनी नाम मम,सखी रूप मम जान ।
जनकदुलारी शरण यह, ऊपर नाम बखान ॥३॥
श्रीजनकललीकी अलीमैं श्रीकृपावती गुरु मोर ।
श्रीचारुशीला आचार्य है, कनक भवन की ओर ॥४॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ते, अधिक प्रतापी होय ।
सिय जू से यदिबिमुखहै, तौ हमार नहिं कोय ॥ ५ ॥
मातु पिता गुरु बंधुजे, सिय पद विमुख निहार ।
त्यागि करौं तेहि शत्रु सम, दृढ़ सिद्धान्त हमार ॥ ६ ॥
सिय जू से यदि विमुख है ताकों कौड़ी लोभ ।
सिय पिय प्यारे के लिये प्राण देत नहिं क्षोभ ॥ ७ ॥
रशिकन से नातो सही रशिक हमारी जाति ।
रशिक हमारे प्राण प्रिय रशिक हमारी पाँति ॥ ८ ॥
खान पान नहिं कीजिये; कबहुँ विमुख के संग ।
पांति दोष अति होत है, भजन भावना भंग ॥ ९ ॥
ढिंग बैठे नहिं विमुख के, मिलै न कंठ लगाय ।
ऊपर मन से मिलि रहै, अंतर में पछिताय ॥ १० ॥
तन मन खोलै रशिक सँग, खेलै हँसै सिहाय ।

भेंटैं भुजा पसारि कै, मनहु रंक निधि पाय ॥११॥
धन्य अली, जिहि भाग को सिय चरणन चित दीन्ह।
सियचरणन से विमुख है, वृथाजन्म विधिकीन्ह।१२॥
सिय शरणागति जो सखी, सोई सुहागिल जान।
नतु सब विधवा जानिये, सिय पदविमुख वखान॥१३॥
सुख दायक सिय लाल पद, दुख प्रद पद संसार।
सिय पिय जाके पति अहैं सो मम प्राणअधार। १४॥
चंद मिटै सूरज मिटै, ब्रह्मा विष्णु पुरारि।
अलि विहारिनी सिया पिय, नित्य अखंड विहार॥१५॥
जितने सब अवतार हैं, नारायन लगि जान।
श्री जनक लली पद रेखतें, अवतीरण भये मान॥१६॥
श्री जनक लली के पद कमल, सेवत हैं सब देव।
दरशन को तरसत सदा, रशिक जानि यह भेव ॥१७॥
जब तक गुरु से सखी तन, मिलै न निज सम्बन्ध।
तब तक सिय जू के दरश, पावत नहिं जड़ अंध ॥१८॥
श्रीसतगुरु सम्बन्ध दै, छिन में करत निहाल।
नतरुअनेकनजन्मधरि, मिलहिंनसियरघुलाल ॥१९॥
महिमा श्रीसतगुरनकी, कहंतक लिखौं अपार।
जिनकी कृपाअखंडसुख, मिलत निकुंजविहार। २०॥
ऐसे श्रीसतगुरुन की, कोटि जन्म करि सेव।

तऊ उरिन नहिं होत है, कोइ जानै यह भेव ॥ २१ ॥
गुरू कृपा से बनेगी, गुरू लखावें राम।
गुरु विन भटकत जगतमें, कोइ न आवत काम ॥२२॥
गुरु कह नाते जगत के, त्यागि त्यागि गहो सार।
सीता तेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उरहार ॥ २३ ॥
प्रीति पंथ सबसे बड़ो, सबसे कठिन विचार।
प्रीति बराबर सुख नहीं दूजी बस्तु निहार ॥ २४ ॥
नेह करन सब कोइ चहै, नेह करौ जनि कोय।
मिलत दुखी बिछुरत दुखी, नेही सुखी न होइ ॥२५।
जल डूबे आगी जलै, सूली पै चढ़ि जाय।
ऐसो दुख नहिं होत है, जैसो नेह बढ़ाय ॥ २६ ॥
नेह लगन जासो लगै, फिरि तिहि परै बिछोह।
ता दुख को को कहि सकै, जाके लागी होय ॥ २७॥
अपनो प्रीतम काटि शिर, लै डारै चौगान।
प्रीतम पद की ठोड़ दै, खेलै सुख हिय मान ॥ २८ ॥
शीस कटन को दुख नहीं, नहिं ठोड़न अपमान।
मम प्रीतम के चरण में, चोट शीस दुखजान ॥ २९ ॥
मेरो शिर अति कठिन है, कोमल पद प्रिय केरि।
लगत चोट यह दुख अधिक, सोलखिप्रीतिनिवेरि।३०॥
प्रीति विवश सियलाल जू, प्रीति विवश गुरु मान।

प्रीति विवश शृंगार सुख, प्रीति रहित दुख जान॥३१॥
प्रीति लगी जाके हिये, सो बड़ भागी जान।
प्रीति रहित नर तन लहो, अतिअभाग्यतिहिंमान॥३२॥
प्रीति लगन सिय लाल सों गुरु दृढ़ता करि लेय।
प्रीतम प्यारी छवि निरखि, तन मन अर्पिसुदेय॥ ३३॥
प्रीतम के गुन सुमिर नित, प्रीतम की छविहेरि।
प्रीतम प्रीति निहारि कै, नेक न करि हैं देर॥ ३४॥
वैदेही वल्लभ नवल श्री चारु शीला नवबाल।
श्री मत्कृपावती नवल, नवल रशिक सुख जाल॥३५॥
परम प्रीति रस रीति यह, अलि विहारिणी प्रान।
जनक दुलारी शरण कृत, सिय पिय सुख की खान।३६
मृदुल मोद मुद माधुरी, करुणा सिन्धु गम्भीर।
स्वामिनि जय श्रीमैथिली, आर्यः श्रीरघुबीर॥३७॥
जो यह पढ़िहैं प्रेम सों भाव भेद रसरूप।
तत सुख स्वःसुखतत्व को, पइहै स्वाद अनूप॥३८॥

❀ शुभम् सुन्दरम् ❀

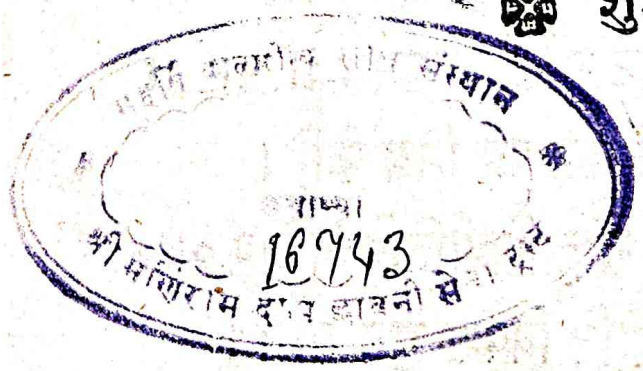
16743